

(Topic: धारणा को प्रभावित करने वाले कारक): - प्रश्न है कि धारणा सबल या दुर्बल क्यों होती है, धारणा कमजोर क्यों हो जाती है या मजबूत क्यों हो जाती है? इस सम्बन्ध में कई कारकों का योग उत्तरलेख किया जा रहा है जो सबसे अधिक महत्वपूर्ण है।

(i) मस्तिष्क की रचना: - किसी विषय की धारणा पर व्यक्ति के मस्तिष्क की रचना का प्रभाव पड़ता है। मस्तिष्क की रचना जितनी जटिल होमे पर धारणा प्रबल होती है और मस्तिष्क की बनावट सरल होमे पर धारणा कमजोर होती है। पशु की अपेक्षा मनुष्य के मस्तिष्क की बनावट काफी जटिल है। इसलिए किसी चीज की धारणा मनुष्य में अधिक प्रबल तथा ठीकाऊ होती है। किसी विषय को सीखने के बाद पशु उसे जल्दी भूल जाता है अर्थात् इस विषय के स्मृति चिन्ह मजबूत नहीं होते हैं, परन्तु मनुष्य किसी सीखे गये विषय को अधिक दिना तक याद रखता है अर्थात् उनके स्मृति चिन्ह सुदृढ़ रहते हैं। जिस व्यक्ति के मस्तिष्क की बनावट जितनी ही अधिक जटिल होती है, उसमें धारणा उतनी ही अधिक प्रबल होती है।

(ii) आयु (Age): - बढ़ती हुई हुई आयु के साथ एक विशेष सीमा तक एक धारणा प्रबल बनती जाती है। बच्चे की अपेक्षा बयानों में धारणा अधिक होती है। इसका कारण यह है कि उसकी उम्र बढ़ने से मस्तिष्क का विकास होता है और इसकी जटिलता में वृद्धि होती है। परन्तु अधिक आयु हो जाने पर मानसिक क्षमता (Mental Power) के कारण धारणा कमजोर होने लगती है।

(iii) यौन (Sex): - धारणा क्रिया पर यौन का भी असर पड़ता है। मान्य बात समान रचना पर लड़कों की अपेक्षा लड़कियों की धारणा अधिक प्रबल होती है। कारण लड़कियों में परिपक्वता की शक्ति अधिक तेज होती है। इसलिए समान आयु पर भी लड़कियों में परिपक्वता की मात्रा अधिक हो जाने के कारण उनकी धारणा अपेक्षाकृत प्रबल बन जाती है।

(iv) बुद्धि :- धारणा क्रिया पर व्यक्ति की बुद्धि का प्रभाव पड़ता है अर्थात् जैसे लगान रहने पर तीव्र बुद्धि के व्यक्ति की धारणा मन्द बुद्धि के व्यक्ति की अपेक्षा अधिक प्रबल होती है। तीव्र बुद्धि का व्यक्ति किसी विषय को जल्दी सीखता है और अधिक दिनों तक याद रखता है तथा समय पर उसका प्रयोग करने में प्रयत्नवादी (practical) होने में सफल होता है। इसी प्रकार मन्द बुद्धि का व्यक्ति किसी विषय को देर से सीखता है और अधिक दिनों तक याद नहीं रख पाता है।

(v) स्वास्थ्य (Health) :- धारणा पर व्यक्ति के मानसिक तथा शारीरिक स्वास्थ्य का प्रभाव पड़ता है। स्वास्थ्य मन के लिए स्वास्थ्य शरीर आवश्यक है। शारीरिक अस्वास्थ्य के कारण मस्तिष्क में सम्यक् चिन्तन कमजोर बनता है जिससे सीखे गये विषय की धारणा दुर्बल हो जाती है। इसी तरह मानसिक अस्वास्थ्य के कारण सम्यक् चिन्तन विकसित हो जाती है।

(vi) प्रेरणा एवं अभिरुचि :- सीखने या याद करने की प्रेरणा अधिक होने पर धारणा प्रबल बन जाती है। कारण व्यक्ति रुचि के साथ उस विषय को समझने तथा सीखने का प्रयास करता है जिससे सम्यक् चिन्तन प्रबल तथा सज्जते बन बन जाते हैं। प्रेरणा के अभाव में सम्यक् चिन्तन दुर्बल बनता है, जिससे धारणा कमजोर बन जाती है। इसी प्रकार जिस विषय में हमारी रुचि अधिक होती है, उसकी धारणा अधिक प्रबल होती है, क्योंकि उस विषय को हम अधिक मन लगाकर सीखते हैं।

(vii) विषय के स्वरूप साधक विषय की अपेक्षा निरर्थक विषय की धारणा कमजोर होती है। निरर्थक पदों को सीखने में अधिक समय लगता है, अधिक कठिनाई महसूस होती है और धारणा इतनी कमजोर होती है कि व्यक्ति उन पदों को जल्दी भूल जाता है। इसी प्रकार शब्दों को सीखने में कम समय लगता है, कठिनाई कम महसूस होती है और धारणा इतनी प्रबल होती है कि व्यक्ति उन शब्दों को अधिक दिनों तक याद रखता है।

(viii) सीखने की मात्रा :- धारणा क्रिया पर सीखने की मात्रा का प्रभाव

प्रभाव पड़ता है। सीखने की मात्रा बढ़ने के कारण धारणा की प्रबलता बढ़ती है। कणों जित विषय को जितनी ही अधिक मात्रा में सीखा जाता है, उसके स्मृति चिन्ह उतने उतने ही स्पष्ट एवं गहरे बनते हैं। दो ऐसे बालक जो आयु, बुद्धि आदि में समान हों, किसी कविता को क्रमशः 10 मिनट तथा 20 मिनट तक सीखें तो पहले बालक की अपेक्षा दूसरे बालक में उस कविता की धारणा अधिक प्रबल होगी।

(ix) विषय की लम्बाई :- छोटे विषय की अपेक्षा बड़े लम्बे विषय की धारणा अधिक प्रबल होती है। कणों छोटे विषय को सीखते समय अधिक दुष्टानों की आवश्यकता नहीं होती है, इसलिए स्मृति चिन्ह कमजोर तथा अपरिष्कृत बनते हैं, धारणा दुर्बल हो जाती है। इसी ओर लम्बे विषय को सीखने के लिए अधिक बार दुष्टानों पड़ता है, जिससे स्मृति चिन्ह प्रबल बनते हैं। इसलिए धारणा प्रबल बन जाती है।

(x) सीखने की विधि (method of Learning) :- किसी विषय को सीखने की विधि का प्रभाव धारणा पर पड़ता है। सीखने की अनेक विधियाँ हैं :- विराम विधि तथा अविराम विधि, पूर्ण विधि तथा अंश विधि, सामिप्राय विधि तथा प्रासंगिक विधि आदि। यहाँ हम केवल इतना कहना चाहेगा कि अविराम विधि की अपेक्षा विराम विधि से और प्रासंगिक विधि की अपेक्षा सामिप्राय विधि से सीखने पर धारणा अधिक प्रबल होती है।

(xi) घृष्टान्मुख अवरोध :- एक विषय को सीखने के बाद जब उपरिष्ठ दूसरा विषय सीखने लगता है तो दूसरे विषय का बाधक प्रभाव घृष्टान्मुख अवरोध कहते हैं। यह बाधक प्रभाव को घृष्टान्मुख अवरोध कहते हैं। यह बाधक प्रभाव किसे लग में पड़ता है, इस सम्बन्ध में मनोवैज्ञानिकों के बीच मतभेद है।